ऋतूल्लासः

कविपुण्डरीकेण

सम्पूर्णदत्तमिश्रेण

विरचितः ।

प्रकाशकः—

उल्लासश्रीभवनम् ।

भरतपुरम् ।

राजस्थानम् ।

वसन्तपंचमी गुरुवासरः

संवत् २०१२

प्रकाशक–
उल्लासश्रीभवनम्
भरतपुरम्
राजस्थानम्

पहली बार १०००

मूल्य १) एक रुपया

मुद्रक–
लक्ष्मीबाई नारायण चौधरी,
निर्णयसागर प्रेस,
२६–२८ कोलभाट स्ट्रीट, बम्बई नं. २

ṚTŪLLĀSA

BY

SAMPŪRṆA DATTA MIÇRA, M.A.

PUBLISHER :—

ULLĀSAÇRĪ BHAVANA,
MOHALLA–GOPAL GARH, BHARAT PUR
(RAJASTHAN)

NIRNAYA SAGAR PRESS
BOMBAY 2
1956

Price Re. 1/-



THE AUTHOR ON JULY 21, 1955

भूमिका



श्रीमान् महान् विद्वान् राजर्षि भर्तृहरि ने क्या ही सुन्दर कहा है—

जयन्ति ते सुकृतिनो रससिद्धाः कवीश्वराः ।
नास्ति येषां यशःकाये जरामरणजं भयम् ॥

कवि का काव्य यशरूप अविनश्वर शरीर प्रगट करता है और वह काव्य ही जन्यजनक भाव से कवि का शरीर कहलाता है। इस शरीर में कभी जरा (बुढ़ापा) और मृत्यु का भय नहीं होता। ऐसे काव्य शरीर प्रादुर्भूत करने वाले कवि पूर्वजन्म के ऋषि होते हैं जैसा कि व्यास भगवान् की इस सूक्ति से सुस्पष्ट होता है—

'नानृषिः कुरुते काव्यम्'

जो पूर्वजन्म में ऋषि (ज्ञानी) होता है वह जन्मान्तर में विद्वान् होकर कवि होता है।

यह काव्य २ प्रकार का प्रख्यात है—

पहला दृश्य; दूसरा श्रव्य। दृश्य वे काव्य होते हैं जिनके वृत्त को देखकर रसानुभव के साथ साथ दर्शक लोग अपने व्यवहार सुधारकर पुरुषार्थ लाभ करें। जैसे नाटक नाटिकादि दृश्य काव्य हैं। श्रव्य वे काव्य होते हैं जिनकी रचना को सुनकर ही सहृदय पुरुष रसानुभव के साथ निजी व्यवहार सुधारकर पुरुषार्थ लाभ करते हैं जैसे रामायण रघुवंशादि।

ये श्रव्य काव्य भी २ तरह के हैं—महाकाव्य और खण्डकाव्य। महाकाव्य सर्गबन्धवाला उदात्त नायक के इतिवृत्त से व्याप्त एवं आठ सर्गों से कम न होकर १४, १८, २०, २५ तक सर्ग वाला होता है। उसके नियत लक्षण काव्यशास्त्रकारों ने निर्णीत कर दिये हैं। और खण्डकाव्य छोटा १–२ से ५–६ सर्ग तक होता है। इसमें कवि किसी खास वर्णन को प्रस्तुत करके लोकशिक्षा का निबन्धन करता है। वह लोकशिक्षा का निबन्धन पटुतापूर्ण और चमत्कारवान् होता है। ऐसे काव्य संस्कृत साहित्य में अनेक हैं। वे सुन्दर से सुन्दर और मधुर से मधुर चमत्कारी एवं भावपूर्ण हैं।

इस ही श्रेणी में विन्यास के योग्य आज हमने भरतपुरनिवासी श्री सम्पूर्ण दत्त जी मिश्र का लिखा हुआ ऋतूल्लास नाम का एक खण्डकाव्य देखा। हमने इसे सम्यक् प्रकार पढ़ा। काव्य छोटा है तदपि मधुर है एवं भावपूर्ण तथा प्रसादगुणपूर्ण है। इस काव्य में स्रग्धरा छन्द उत्तम रीति से सुसज्जित हुआ है। यह ग्रीष्म (गरमी) ऋतु से प्रारंभ किया गया है। ऋतुसंहार नाम का कविकुलशिरोमणि कालिदास का काव्य भी ग्रीष्मकाल के वर्णन से ही आरंभ होता है।

कविवर ने प्रारंभ के ग्रीष्म प्रादुर्भाव के पद्य में चण्डिका को उपमान बनाते हुए सामयिक सभ्यता को बतलाते हुए श्रीमानों की प्रवृत्तियाँ सज्जनों के शिष्टाचार से विरुद्ध न होने पावें इस हेतु जाहिर में विकटता दिखाने वाली तेज रविकिरणसंपन्न ग्रीष्म ऋतु का प्राकट्य प्रदर्शित किया है। इस पद्य में उत्प्रेक्षा उपमा दोनों अलंकारों की संसृष्टि का निबन्धन हुआ है, अच्छा मनोरंजक है।

दूसरे पद्य में इस घाम की क्रमिक वृद्धि को पटुतापूर्ण युक्तिसंगत चित्रित किया गया है। ३ में प्रातः मध्याह्न एवं सायंकाल तक घाम तपे लोगों की दिनचर्या बतलाते हुए उस प्रचण्ड गर्मी के अनुभव का दृश्य प्रत्यक्ष कर दिखाने का सफल प्रयत्न हुआ है कि जिसमें सब दिन और रात में भी अर्ध रात्रिपर्यन्त चैन नहीं पाते हुए लोग किसी तरह प्रभात समय में ही तनिक निद्रासुख प्राप्त कर पाते हैं। ४ था पद्य तो पाठकों को कभी भूलने का नहीं हो सकता है। इसमें बुराई में भलाई, अवगुणों में गुण, दुःखों में सुखदृष्टि से देखकर आत्मा में सन्तोष प्रगट करने वाले महान् सन्तों की वृत्ति का प्रदर्शन भली वाक्यरचना से हुआ है, बड़ा सुन्दर अर्थान्तरन्यास अलंकार का निबन्धन हुआ है।

५ वाँ पद्य और भी रोचक भावव्यंजनापूर्ण हुआ है। पुरुषार्थ (पराक्रम) से दुःख दूर किये जाते हैं। उस पुरुषार्थ का आश्रय शरीर है। उस शरीर की रक्षा में विरोधरूप कायक्लेशजनक तपस्यादि को और उसकी रक्षा में शास्त्रनिर्देशों को भी देखते हुए आधे मन से तिरस्कार और आधे मन से समर्थन करता हुआ यह मनुष्य कर्तव्याकर्तव्यशून्य सा क्यों हो जाता है!

आगे चलकर वर्षा का उद्गम बड़ी मनोरञ्जकता से प्रारंभ किया है। ९ वे पद्य में प्रथमवर्षण से सगन्धा पृथ्वी को प्रवृद्धकामा कामिनी के समान वर्णन करते हुए कवि ने परिणाम और उपमा का सम्मिश्रण बड़ा मनोरम किया है।

बादल के बहाने से दानी का, वारिधारा के बहाने से पुत्रिका की अम्बा का तो कहीं रात्रि को वृक्षान्धकारों में झूलती हुई कामिनियों के गीतों का प्रसार, कहीं बिजली की चमक में दाताओं की कीर्ति का प्रकाश, कहीं वर्षा के उत्कृष्ट गुणों और प्रभावों के साथ साथ दीनजनों की छितराती अवस्था को दिखलाया है।

शरद् का उदय वर्षारूप कल्प (कायाकल्प) को सहकर होने के कारण कवि ने शरद् में नवीनता का प्रकाश बड़ी चारुता से किया है। वृक्षों के द्वारा वर्षा के गुण स्मरण कराने में भी कल्पना का उदात्तभाव चमकाया है।

शरद् की चाँदनी में धनिकों के बँगलों का वर्णन भी सुन्दरता से हीन नहीं है। शरत्पूर्णिमा को खीर (पायस) कितना मधुर और रुचिकर उपयोग किया है वाह! वाह! वास्तव में उन दीन किसानों को और सहज दरिद्रों को वह खीर कुछ काल तो विषादरहित बना ही देती है। फिर सस्यसंपत् मिलने से जीवनाभिलाष भी परिपुष्ट हो ही जाता है, बड़ा रमणीय वर्णन है।

शहर के निकट ग्राम से आये ग्रामीणों का एक दृश्य दिखाते हुए २१ वे पद्य में कवि ने शरत् में यातायात प्रारंभ बतलाते हुए नगर की चमचमाती हुई हाटों पर खरीद फरोख्त पर झगड़ा दरसाते हुए राजशासकों को विश्वास दिलाया है कि वे देश या साम्राज्य के लिए नहीं लड़ रहे हैं।

२२ वे पद्य में वृक्षों के पत्रों पर धीरे धीरे श्यामता घनी होने से और नदीकूलों पर या बावड़ियों में पानी पर की काई एवं प्रातः सायं अग्नि के सेवन में अभिरुचि प्रगट होती है इससे शीतऋतु (हेमन्त) का आगमन बड़ी खूबी से हुआ है। यहाँ उल्लास अलंकार है। बीतती हुई शरद् के दोषों के द्वारा हेमन्त का प्रादुर्भाव रूप उल्लास ही अलङ्कृतिरूप होगया है।

'एकस्य गुणदोषाभ्यामुल्लासोऽन्यस्य तौ यदि' इस लक्षण के अनुसार देखिए। इसी प्रकार हेमन्त के वर्णन को निमित्त कर लोकतन्त्रराज्य के शास-

कवर्ग को कर्तव्य में जुट जाने का निदर्शन भी प्रौढ प्रतिभा का विलास है। यह भी बड़ी मनोरमता से हुवा है।

आगे चलकर २६ वे पद्य में हेमन्त को ऐसे राजनीतिप्रयोक्ता के समान बतलाया है जो सीधे सादे लोगों को स्वार्थसिद्धि के लिये अनाप सनाप लूट लेता है और समयानुसार प्रतिवचन देता रहता है। उपमा बतलाई है। हेमन्त वर्णन बड़ा रोचक हुआ है।

२७ वे पद्य में वासन्ती सुषमा को दक्षिणा (अनुकूला) धर्मपत्नी के समान गृहपतियों की सेवा करती हुई प्रदर्शित किया है। २८ वे में वसन्तसम्पदा के उपभोग से रागविशेष होना स्वाभाविक बतलाते हुए वेदान्ती योगी यति आदि सिद्धों के ब्रह्मविद्योपसेवनरूप पराग के आघ्राण को कथमिव पद से दुष्कर बताया है अर्थात् वे धन्य हैं जो ऐसे समय में भी ब्रह्मविद्यापराग से मस्त हुए रहते हैं।

२९ वे में धैर्य से विपद् को पार कर जाने वाले तपस्वियों का आगामी प्रकाश पूर्ण समृद्धिसम्पन्न होता है इस सामान्य के लिए वृक्षों का पत्रनिपतन और घाम वर्षा शीतादि कष्ट सहन के बाद वसन्त में नवीन पल्लवादिप्रादुर्भाव बतलाया है। वर्णन सुन्दर हुआ है, अर्थान्तरन्यास अलंकार अच्छा बैठा है।

पद्य ३० वे में भी वसन्त की फली फूली सम्पदा को ब्रह्मानन्दविलीन मन वाले महात्मा लोग मुसकान के साथ देख रहे हैं यह उक्ति कितनी सारगर्भित है। वसन्त को देखकर ब्रह्मविद्यानिष्णात (ज्ञानी) भी मुसका जाते हैं। और इस सदा प्रतिवर्ष आने जाने वाली वसन्तलीला को देखकर वे मुसकाते हैं, ऐसी नश्वर वस्तुओं पर आसक्तिवालों पर हँसते हैं, इत्यादि। ३१ पद्य हैं, श्रेष्ठ हैं।

हमने इस पुस्तक को विचारपूर्वक देखा है। ऋतुवर्णन कविसम्प्रदाय की मर्यादा के अनुकूल ही हुआ है, मधुर हुआ है और समयानुकूल भी हुआ है। यह नवीनता अनुकरणीय है।

सम्प्रतिकालीन कवियों को संस्कृत साहित्य के प्रवर्धन के लिये ऐसा ही प्रयत्न करना चाहिए जिसमें अपनी मर्यादा, साहित्य का स्वरूप, गुण अलंकार, रस, रीति, वृत्ति आदि लुप्त न हों और नवीनता (सामयिक व्यवहारों और

वृत्तों का उपयोग) भी आजावे। अपना स्वरूप दूसरों को देकर खाली न होजाना चाहिए। अपना स्वरूप संस्कृति आदि गुण सुरक्षित रखते हुए दूसरों के समयानुसार गुण ग्रहण कर स्वकीय साहित्य का संवर्धन करते रहना चाहिए। बस, यही हमारे प्राचीन रसविज्ञ कवियों ने किया है और हमें भी ऐसा ही करना श्रेय है। इसी क्रियानुयोग से देश का साहित्य बढ़ता है इसमें सन्देह नहीं है।

कविवर श्री सम्पूर्ण दत्त जी का यह प्रयास संस्कृतसाहित्यरूप महान् उपवन की ओर भावुकता के साथ हुवा है। इसके द्वारा ये संस्कृतसाहित्यरूप महान् उपवन की संवृद्धि और सुरक्षा करने को अन्यान्यभी निबन्ध लोकोपयोगी सरस और मधुर भावपूर्ण लिखेंगे।

कवि की कृति में सहृदयता और अभिनवरोचकता भरी पड़ी है, समय २ पर उपयुक्त होती जायगी तो बड़ा लाभ होगा। प्रसादगुण है और रचना सरस एवं सरल है। साथ २ हिन्दी अनुवाद भी कसौटी पर कसा हुआ सा प्रतीत हुआ है। भाषा बहुत ही व्यावहारिक है, सब को ही पसन्द आवेगी।

कवि ने पद्यों का इंग्रेजी अनुवाद भी कर दिया है। इससे इंग्रेजी के विद्वानों को भी इस संस्कृत साहित्य के वर्णन के तरीकों का अनुभव होगा, वे भी इसे पढ़कर प्रसन्न होंगे। इसी भावना को प्रकाशित करते हुए हम इस छोटे से काव्य की इस सूक्ष्म भूमिका को भी बृहत् रूप न देकर भगवती शारदाम्बा से प्रार्थना करते हुए विराम करते हैं कि वह जगद्वन्दनीया भगवती इस ऋतूल्लास के लेखक कवि श्रीसम्पूर्ण दत्त जी को नित्य नया नया प्रतिभा-प्रकाश देवे और इस ऋतूल्लास काव्य का संसार में अधिकाधिक प्रसार हो।

१०-६-५५ ई०

श्रीहरि शास्त्री दाधीच
जयपुर।

स्वल्पाकारमपि प्रसादमधुरं काव्यं सुधावर्षणं
निर्मायैतदनाविलं खलु ऋतूल्लासाभिधानं कविः ।
विश्वेषां कविताकृतां सुमनसां चेतांसि संप्रीणयन्
लब्ध्वायं कविपुण्डरीकपदवीं जीयात्सतां संसदि ॥

मिश्रश्रीसम्पूर्णदत्तप्रणीतं सहृदयहृदयाकर्षणरमणीयपदार्थाभरणं ऋतुवर्णनपरं ऋतूल्लासाभिधानमिदं लघुशरीरमपि बृहदर्थगर्भमन्वर्थं काव्यं पठित्वा परममुल्लासमवापास्माकम् हृदयम् ।

विरला एव नन्विदानीं गीर्वाणवाणीचरणपरिचरणपरायणान्तःकरणाः कवयो विबुधा अपि । ईदृशेऽपि समये एतत्कवियुवकसदृक्षा विरलविरलाः प्रतिभामण्डिता निजनवनवरचनाभिः सुरभारतीसेवार्थं बद्धपरिकरा इति भारतीयानां कृते महद्धर्षास्पदम् । यत्सत्यं कृतिरियं कर्णाभ्यर्णंकृता पीयूषपूरमुद्गिरतीव । किमधिकेन लेखनेन कवयो रसिकाः सहृदयाः स्वयमेव पठित्वा काव्यमिदं साक्षिणो भवेयुरिति ।

पौषवदि नवमी शनिवासरः
संवत् २०११

अमृतवाग्भवाचार्यः



I had the occasion to peruse 'Ṛtūllāsa' composed by Pt. Mishra. The poems show the author's unwearied pursuit of learning. The author has ably described the break of rains in a mellifluous voice. The poet of love has sublimated himself into a poet of truths He has tried to translate the natural beauties of the seasons to realities. The poems have thrown full glare on the natural beauties of the seasons. The Savant writer has a clear vision born of dispassionate outlook.

In these days, when Sanskrit studies are so much languishing, the author has achieved great ends and deserves every commendation for composing these poems.

Sd./A. Bhattacharya
1st. Addl. Sessions Judge.
Allahabad.



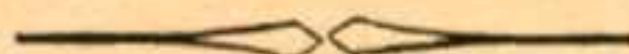
1, King George Avenue,
PATNA-1.
February 22, 1954.

Dear Shri Acharya,

I have now been able to go through the verses of Shri Sampurna Datta Miśra. I have been greatly impressed both by his command over the language and by his poetic gifts. I return the manuscript herewith.

Yours sincerely,
Amaranath Jha

Shri K. C. S. Acharya,
Central Y. M. C. A.
Queens Road, Allahabad.



Mahamahopadhyaya
Dr. P. K. Achraya, I. E. S. (Rtd.)
(B. A. Hons. M. A., PH D., D. Lit. London)

Swastik Bhawan
George Town
Allahabad 4-3-1954.

I have read with pleasure the "Ṛtūllāsa" by Paṇḍit Sampūrṇa Datta Miśra in manuscript. It comprises 51 verses composed in easy style after the famous 'Ṛtu Saṁhāra' ascribed by some to the great poet Kālidas.

Miśra's attempt is laudable and deserves appreciation and encouragement. It is probably his first effort but the verses read well and show some poetic inspiration. One may make some allowance for his youthful skill and romance. In his future attempt he is sure to show better result. May the Goddess of poetry fulfil his ambition.

Sd./P. K. Acharya.

Thirty-one verses are published here out of 51 verses known to the learned opinion-writer.

S. D. Micra

R. V. Kumbhare,

M. A., B. T., T. D. (London)

Deputy Director of Education.

Rajasthan.

Jaipur,

February 11, 1955.

It gave me a great pleasure to listen to the 'Ṛtüllāsa' of Pt. Sampūrṇa Datt Miśra recited by himself. In these days when the study of Sanskrit is so much neglected it is refreshing to find a teacher composing in Sanskrit. When the verses were being recited to me I was reminded of Kalidasa's 'Ṛtu Saṁhāra' The budding poet is a keen observer of nature and has a command over Sanskrit language. Pt. Miśra is gifted with genius and can compose with ease and fluency which are not easy to find. I am particularly happy to see that a teacher burdened with his routine work can worship at the feet of 'Saraswatī'. I am sure 'Sarasvatī' will shower her choicest blessings upon Pt. Miśra.

Sd./R. V. Kumbhare

श्रीः

ऋतूल्लासः ।

श्रीमग्नानां कदाचिन्न भवतु सुजनाचारभिन्ना प्रवृत्ति-
र्मद्भक्तानामितीयं सपदि भगवती योगमाधातुकामा ।
गूढं विघ्नव्यपोहं प्रकटविकटता निर्दिशन्ती जनानां
चण्डीवातिप्रचण्डा तरुणरविरुचिर्ग्रीष्मताविर्बभूव ॥ १ ॥

ऐश्वर्य का अवसर अपने भक्तों को शीघ्र ही जुटाना चाहती हुई तथा भीतर से उनके विघ्नों का विनाश करने वाली पर कहीं वे लक्ष्मी के मद में सज्जनता को न छोड़ बैठें इस कारण ऊपर से अनुकूलता न दिखाने वाली भगवती चंडी के समान तरुण सूर्य की कान्ति लिये, लो, यह ग्रीष्म ऋतु संसार में प्रकट होगई ।

The summer season revealed itself with the brilliance of the rising sun analogous to the Goddess Caṇḍī who having been occupied with the thought of welfare and progress of her devotees removes their obstacles internally without giving any sign of favour externally fearing lest they should be devoid of goodness after being at the height of their fortune.

हा ! हा ! किं वा विधेयं तपति खरकरो निर्भरं भास्करोऽयं
प्रत्यूषादेव तप्तश्चलति तृणरजांस्युद्वहन्मातरिश्वा ।
वृक्षच्छायास्वपीतः परमहनि न तत्प्राप्यते शैत्यमित्थं
ग्रीष्मस्येषत्प्रसारे झटिति विलपितं सौकुमार्याभिषिक्तैः ॥२॥

अभी ग्रीष्म ऋतु ने अपना प्रसार थोड़ा ही कर पाया था कि मानो सुकुमारता से अभिषेक किये गये लोग यों चिल्लाने लगे उफ् अब क्या करना चाहिये। यह सूर्य तो इतना तप रहा है और दोपहर पहले से धूल तिनकों से भरी उष्ण वायु चल रही है। और तो और, पेड़ों की छाया में भी तो अब दिन में वह पहली सी ठंडक नहीं रही।

'Lo ? what should we do now ? The sun shines with its clear hot beams, the hot air blows since before-noon, taking with it dust and straw. No more the cool shadow of trees is available at day time,'-thus it was complained of the budding summer season by those who had been brought up in the graceful environment.

स्वेदाम्बुक्लिन्नदेहा दिवसपतिकराकृष्टवस्त्रा वसन्तो
मध्याह्ने प्रस्वपन्तः कथमपि च दिनङ्गौरवेणातिवाह्य ।
सन्तापं संप्रहर्तुं सुविहितविविधोपक्रमा आप्रदोषं
शैत्योन्मिश्रं श्रयन्ते सुखशयनरता मन्दवातं प्रभातम् ॥ ३ ॥

पसीने से भीगकर और धूप के मारे लोग कपड़े उतार देते हैं तथा दोपहरी में सोकर जैसे तैसे दिन बिताते हैं। इस व्याकुलता को दूर करने के लिये वे रात को बहुत देर तक भाँति भाँति के उपाय करते रहते हैं। पर हाँ, प्रभात काल में ऐसी ठंडी ठंडी धीमी हवा चलती है। कि वे चुपचाप बिस्तर पर पड़े इसका आनन्द लेते रहते हैं।

People, covered with sweat and bereft of clothing due to the heat of the sun pass the daytime uneasily, sleeping at noon. In the beginning hours of night they remain busy making various devices to decline heat but at morning they go on enjoying the cool breeze turning sides on their beds.

किं काम्यं घर्मकाले तदपि कतिपयैर्वर्ण्यते तन्महत्त्वं
किं रम्यं रोदने तद्विपदि निपतितं तर्पकं तत्तथापि।
किं सौम्यं दुर्जनानां वचसि च सुजनैः सह्यते नैकवारं
दुःखेष्वप्यात्मलाभं कमपि वृतवतां वृत्तिरेवेदृशीव॥ ४॥

भला ग्रीष्म ऋतु में भी ऐसा क्या है जिसकी लोग कामना करें पर फिर भी कुछ लोग उसका महत्त्व बताते हैं और रोना ही कौनसी अच्छी बात है, यह तो विपत्ति में बन ही पड़ता है पर लोग इससे भी तृप्ति अनुभव करते हैं। और देखिये, इन दुष्टों की वाणी में ऐसी मारकर कौनसी अच्छाई है कि सज्जन एक बार नहीं अपि तु अनेक बार सह लेते हैं। (कुछ नहींजी, हमने तो यह पाया कि) दुःखों में भी अपना कुछ न कुछ लाभ ढूँढ़ निकालने की कुछ लोगों की मनोवृत्ति सी हुआ करती है।

What is there desirable in the summer season? Still people stress its importance. There must be no charm in weeping: tears are natural in adversity nevertheless people feel satisfied. There is hardly anything fine in the words of wicked persons but good persons are found to receive them time and again. So I ween that it is the mental status of man that seeks some gain even in his troubles.

दुःखात्यन्ताभिघातं विदधति पुरुषाः पौरुषेणेति सिद्धं
सिद्धीनां मूलमेतद्वपुरलमिति तद्रक्षणे यद्विरोधम् ।
संकल्पार्धेन वाञ्छन्नभिभवितुमनिच्छन्तदर्धेन दीनः
कर्माकर्मान्तरित्थं निरवसितमतिर्म्लायते कस्य हेतोः ? ॥ ५ ॥

इसमें कोई संदेह नहीं कि पुरुष अपने पराक्रम से अपने दुःखों को सदा के लिये नष्ट कर देते हैं और यह शरीर सिद्धियों का मूल है इस विषय में तो अधिक कुछ कहना ही क्या है परन्तु इसकी रक्षा के सम्बन्ध में भी जो विरोध पाया जाता है उसका आधे मन से तिरस्कार करता हुआ और आधे मन से समर्थन करता हुआ यह बेचारा दीन मनुष्य क्या करूँ क्या न करूँ इस प्रकार कोई निर्णय न कर पाता हुआ क्यों व्यथित हो रहा है ?

No doubt, people avert thair misfortunes for ever with the strength of their efforts. Past question, body is the origin of all success but poor man, staggering between the opinions of its protection and negligence is sick at heart as to what course he should adopt after all. He lives at random. Why ?

सन्तानैः संवृतानां बत धरणिजुषां क्षामदेहस्वराणां
हित्वैकं कर्षकाणां निजशरणगतं वस्तु वीतोत्सवानाम् ।
औष्ण्यानौष्ण्यानपेक्षं मितकरणवतां जीवनं जीविकायै
रम्यं संभाव्यते यत्तदिति रसविदां काव्यरागानुबन्धः ॥ ६ ॥

बेटे बेटियों से घिरे हुए, भूमि जोतकर निर्वाह करने वाले, दुबले पतले, मरी सी बोली में बोलने वाले, केवल अपने घर की बात को छोड़कर और किसी की बात में रुचि न रखने वाले, उत्सवों में उत्साह न दिखाने वाले, धूप छाँह की चिन्ता छोड़ अपने थोड़े से साधनों से जीविका जुटाने वाले किसानों का जीवन यदि किन्हीं को मनोहर दिखाई देता है तो यह रसिकों के काव्य प्रेम की प्रतिक्रिया मात्र है ।

If the professional life of peasants surrounded by sons and daughters–the life where they till land, are reduced in body as well as voice, show no concern with anything other than their houssehold affairs, have no relish in functions and ceremonies, earn living with the aid of their limited means being indifferent to heat and cold–seems attractive to some people, it is merely the effect of their poetic ecstasy.

लब्धेष्टव्यञ्जनानां विदलितविपदां स्याद्बुभुक्षापि धन्या
कान्तासङ्गप्रसङ्गे सुभगविधिवतां विप्रयोगोऽपि रम्यः।
दौःख्यं वा कुत्र निन्द्यं यदि भवति नृणां निश्चितं सौख्यमन्ते
लोको ग्रीष्माभितापं किमिति न सहते प्रावृषः प्रत्ययेन? ॥ ७॥

जिनको मन चाहे भोजन की कमी नहीं और जिनकी विपत्तियाँ नष्ट होचुकी हैं ऐसे मनुष्यों की भूख भी प्रशंसनीय है। अपनी कान्ता की संगति फिर प्राप्त कर लेने वाले भाग्यशालियों का वियोग भी अच्छा। ऐसे दुःख की निन्दा कौन करे जिसके पीछे निश्चित सुख की प्राप्ति होती हो। फिर संसार ग्रीष्म की व्याकुलता को कहीं इसीलिये तो नहीं सह रहा कि उसके पीछे वर्षा अवश्य आयेगी ?

Thanks for the hunger of happy men who have no scarcity of desired meals; pleasing are the waiting moments of lucky lovers who meet again and who will speak ill of troubles provided those be followed by success and happiness? The world, perhaps, bears the scorching summer heat convinced of the surity of rains.

जीमूतोद्गारमेतं दयितपरिचिताचारमेवामनन्ती
तत्कालोद्धूतशाखैस्तरुभिरभिसृतै रोमहर्षाभिरामा।
वृद्धोच्छ्वासा सगन्धा परिचलितरजःस्तम्भकाले पृषद्भि-
र्दन्तस्पृष्टाधरेयं व्यवहरति धरा कामिनीवेद्धकामा॥८॥

बादल की गरज को अपने प्रिय की जानी पहचानी बातचीत समझती हुई, ओठ को दाँतों से दबाते ही होने वाले रोमहर्ष का परिचय तत्काल उठ खड़ी हुई डालियों वाले पेड़ों के रूप में देती हुई, बहती हुई हवा के रूप में वेग से साँस लेती हुई और अपने स्थान से चले हुए रज को बूँदों द्वारा दबाये जाने के समय भीनी भीनी गंध वाली यह पृथ्वी सचमुच उद्दीप्त वासना वाली कामिनी के समान आचरण कर रही है।

The earth, having the report of a cloud in the way of a lover's acquainted private utterance, the trees with the upheld branches in the way of thrilled hair, the wind in the way of increased breath spreading fragrance at the time of displaced Rajas receiving the rushing drops, behaves like a sensuous lady whose lust has just been encouraged by a capital touch of her lover's teeth on her lip.

प्रावृण्मेघाभिषिक्ता विटपिगतलता तन्तुसंसक्तशाखा
सद्यः पीनोज्ज्वलाभा युवतिरिव रसक्लिन्नवर्णा स्फुरन्ती ।
आस्योपात्तं प्रहृष्टा रसयितुमखिलं भोजनं स्वादु शीघ्रं
सौकर्यं साधु लब्धुं प्रसरति प्रथमग्रासलुब्धेव जिह्वा ॥ ९ ॥

उधर वह पेड़ की शाखाओं से अपने तन्तुओं द्वारा लिपटी हुई बेल प्रावृट् के मेघ से छिड़की जाकर अभी उभरे अंगों वाली पुलक से काँपती हुई सलोनी युवति के समान लगती है । यह उस जीभ के समान फैल फूल रही है जो स्वादिष्ट भोजन का पहला गस्सा आते ही उस सब को शीघ्र ही ऊपर लेकर रस लेने के लिये हर्ष से प्रभावित हो जाती है ।

The creeper plant resorting to the tree with its tendrils and being showered on by rainy clouds resembles the fair young woman of sound health thrilling with emotion. The plant struggles to secure ease just like the subdued tongue which is encouraged by the first morsel of flavoury meals and extends itself to take the relish of the whole of it.

सेकारंभे जलानां भवति परिवृता मेदिनी सप्रमोदं
स्कन्धस्नातैः समन्तान्नयनसुखकरैः कम्रदूर्वाप्ररोहैः ।
पारुष्यं किं दरिद्रे प्रकृतिरिति तथा मुग्धलोके लघुत्वं
लालित्यालंकृतो वा समधिगतधने रूपयोगोऽपि धातुः ? ॥१०॥

वर्षा के आरम्भ में पृथ्वी पर उगी छोटी छोटी मनोहर दूब तने तक जलमें डूब कर आँखों को सुख पहुँचाती है । क्या दरिद्रों के व्यवहार में रूखेपन मूर्खों में गौरवहीनता और धनिकों में सौन्दर्य के साथ लालित्य की सृष्टि करना भी ब्रह्मा के स्वभाव में ठीक वैसे ही है (जैसे कि वर्षा के आरम्भ में हरी घास की सृष्टि करना ?)

With the beginnig of the rainy season the earth is covered with tender grass, dipped to the stem in water, and so presenting a pleasing sight to our eyes. Does the Creator produce irritation in the poor, light-heartedness in fools and the association of grace with beauty in the rich according to the same project ?

आदायोर्ध्वं प्रवृत्तो दिवि सलिलनिधेर्दानयोग्या अपोऽयं
साकाङ्क्षं वीक्षितोऽपि प्रणयिभिरनिशं विप्रलब्धार्थिसार्थः ।
दूराध्वानं प्रयातो रसितमनु पराक्रम्य पश्यास्बुवाहो
रिक्तत्वं चानपेक्ष्य क्षरति ननु परामृश्य विद्युत्कलत्रम् ॥११॥

बादल बरसाने के लिये समुद्र से जल लेकर आकाशमार्ग से चल पड़ा। पानी चाहने वालों ने उसे आकांक्षाभरी आँखों से देखा पर वह उन सब को छोड़ गया। जब दूर निकल गया तो बिजली कड़की। भइया, तनिक देखो तो, अपनी बिजली रूपी पत्नी के संकेत पर अपने सर्वथा खाली हो जाने की भी चिन्ता छोड़ कर अब यह बादल बरसने में कितना पराक्रम दिखा रहा है।

The cloud took up to the celestial route after taking water worth distribution from the ocean. It was seen by the needy with their requesting eyes but it disappointed them. It went on till thunder. Please see, how deligently it pours now even at the risk of its exhaustion. It does so, probably, at the hint of its wife, the lightning–the flash?

हृष्यन्तो नीलकण्ठाः सजलघनघटाघर्घरारावरक्ताः
कूजन्तो मुक्तकण्ठं सरणिमुपदिशन्त्यद्य लोकं कृतज्ञम् ।
कुल्यायां शैवलान्तः प्रसभमपि पुनर्वारिधारा पतन्ती
पुत्र्या उद्वाहितायाः स्पृशति मन इव च्छद्मना कर्कशाम्बा ॥१२

ये जल से भरे बादलों की गड़गड़ाहट से प्रसन्न होकर मुक्त कंठ से कूकते हुए मोर लोगों को कृतज्ञता का पाठ पढ़ा रहे हैं। और यह नदी की काई को बार-बार बरसकर हटाती हुई जलधारा युक्तिपूर्वक अपनी विवाहित पुत्री के मन की थाह सी लेती हुई किसी कर्कश माँ की भाँति आचरण कर रही है।

The peacocks, pleased with the report of rainy clouds, advise the obliged world the way of recognizing their well-doers with full throat. The rain drops fall on the rivulet piercing through its mossy layer again and again just as a karkaaā mother goes on touching cleverly the heart of her married daughter.

निम्बाधस्तान्निशायां दलकुहरमभिव्याप्य संस्थेऽन्धकारे
व्यक्तेः कस्याश्चनापि व्यथितगतिकथां छन्दसा कीर्तयित्वा ।
नानाशास्त्रप्रमाणोद्धृतसुकृतिशतप्रत्यभिज्ञानभिज्ञो
दोलास्वान्दोलितोऽयं युवतिजन इतः काव्यसृष्टिं तनोति ॥१३

रात को पत्तियों की पोल में जब अँधेरा भर जाता है तब नीम के नीचे किसी के दुःखित जीवन की कहानी गाकर सुनाती हुई पर अनेक शास्त्रों से प्रमाण के रूप में उद्धृत की जा सकने वाली सैकड़ों सूक्तियों को यहाँ घटाने का ज्ञान न रखने वाली ये युवतियाँ इधर झूलों में बैठी बैठी ही काव्यसृष्टि का विस्तार कर रही हैं।

Under the neem trees, when the hollow of tree leaves is pervaded by nuptial darkness, young women moved on cradles go on creating poetry in the way of singing to us the wretched tale of some person, though they are not acquainted to the process of examining critically the hundreds of good sayings quotable in their support from so many branches of learning.

भूमौ नास्ति प्रकाशः समुपनतघनैर्व्योम कृष्णाञ्जनाभं
प्रत्यक्षं पीडितोऽपीत्यनुभवति जनो जायते किञ्चिदिष्टम् ।
आसारः क्षीणमेवं व्यथयति विविधं सङ्कटस्थेऽपि लोके
विद्युल्लेखेव शीघ्रं भवति परिसृता दानवीरस्य कीर्तिः ॥ १४ ॥

पृथ्वी पर प्रकाश नहीं रहा और घिरे हुए बादलों से आकाश काले अंजन के समान लगता है। इस समय सच बात तो यह है कि लोग दुःख पा रहे हैं पर फिर भी वे सोचते हैं कि चलो कुछ न कुछ अच्छा ही हो रहा है। वर्षा का वेग इस प्रकार दरिद्रों को सता रहा है पर संसार में अनेक संकटों के रहते हुए भी दानवीर की कीर्ति चमकती हुई बिजली के समान फैल ही जाती है।

Presently there is no light on earth; the sky packed up with clouds is a black rock colour. The world is doubtless facing a crisis, nevertheless people feel that some thing good is being done after all. It is plain that heavy rainfalls oppress the poor yet whatever catastrophe the world may be in, the fame of a courageous giver spreads like a lightning flash.

जाने कीदृग्विलासं रचयति सुखिनां रम्यहर्म्यस्थितानां
दीव्यन्ती वोत्प्लवन्ती चपलगतिशतैः प्रस्रवन्मेघमाला ।
इत्थं सन्दानितोऽयं कथयति विलपन्नीशकृत्यं विनिन्दन्
वर्षोत्कर्षं विधात्रा किमिति भगवता विस्मृतो दीनलोकः ? ॥१५

दुःख पाने वाले झींककर भगवान् की इस लीला की आलोचना करते हुए कह रहे हैं कि रिमझिम की झड़ी लगाती हुई तथा सैकड़ों प्रकार की चंचलगति से ऊपर उठकर खेल मचाती चमकती हुई यह मेघमाला बढ़ियाँ बँगलों में रहने वाले व सुखी लोगों को कैसा दृश्य उपस्थित करती है यह हम जानते हैं पर वर्षा के इस उत्कृष्ट रूप का विधान करते समय क्या भगवान् दीनलोक को भूल गये थे?

The men in trouble comment on the God's creation: 'Of course we know what entertainment the set of clouds crowling in hundreds of ways, gives a happy observer residing in decent room.' They add, 'Did God forget the poor folk when scheming out such a heavy rainfall ?'

गम्भीरं घातितोऽपि प्रकटमनुदिनं दुष्प्रसक्तोऽपि लोको
नात्यन्तं प्रेमपाशं दशति सहचरीतिक्तवाक्येन खिन्नः।
अद्यापायं सहित्वाप्यवनमति शिरो भाविसौख्येन हृष्टो
बुद्ध्वेष्टानिष्टयोगात्मकमखिलमिमं सर्गमेवं गृहस्थः ॥ १६ ॥

गृहस्थ लोग अपनी सहचरी के कडवे वचनों से खिन्न होकर रह जाते हैं चाहे उन पर कितनी भी गहरी चोट की गई हो और चाहे कितना भी अशोभनीय प्रसंग प्रति दिन उपस्थित कर दिया जाता हो। वे अपने प्रेम के पाश को सदा के लिये काटकर नहीं फेंक देते। ये गृहस्थ लोग सारे संसार को अच्छाई और बुराई से भरा समझ कर आज जो कुछ बीत रही है उसको सिर झुका कर इस लिये सह रहे हैं कि पीछे जो सुख मिलेगा उससे हर्ष होगा।

People have to bear the unkind words of their wives. However seriously they might have been offended and however common the unbecoming occasions might have been there, they are not prepared to severe their love-relations once for all. They, knowing that the whole world is a complex of good and evil, submit before the furious occasions considering the entertainments and gains of future.

वर्षाकल्पं प्रकल्प्य प्रभवति भुवनं भोगयोग्यं सुरम्यं
सन्नद्धं जातु जातं महदपि शिशिरक्लेशमुग्रं सहिष्णु ।
दुःखोत्तीर्णस्तपस्वी प्रबलतरमतः कष्टसंघेऽप्यभीतः
लोकः पश्योल्लसन्तीं शरदमनुभवत्यप्रमत्तः प्रसन्नः ॥ १७ ॥

वर्षा रूपी कल्प को कर लेने पर संसार भोग के योग्य सुन्दर बन गया है । अब कदाचित् लोग बड़े से बड़े जाड़े के दुःख को भी सहने के लिये सन्नद्ध होगये हैं । एक दुःख को पार करके उससे भी अधिक तीव्र ताप से न डरते हुए ये तपस्वी लोग, देखो तो, प्रसार पाती हुई शरद् ऋतु का कैसे प्रमादरहित और प्रसन्न होकर अनुभव कर रहे हैं।

The rainy season was just like a healthy tonic after which the world has become more beautiful and nourished. People have prepared themselves to tolerate the cold season troubles of any grade. They have developed their resisting capacity and fearless attitude towards discomforts after passing through so many of them. See, how gladly and cautiously they appreciate the glory of evolving carat season.

कुत्रास्ता सापि विद्युन्नभसि विलसिताः कुत्र याताश्च मेघाः
कुत्रोद्घोषैर्गतं तद्विरचितविभवं चित्रमिन्द्रायुधं वा ।
कुत्रोदग्रैः प्रयातं परिचितसलिलैर्वृष्टिदीर्घैरहोभि-
र्नष्टक्लेदा रमन्ते शरदि गतमिव स्तब्धवृक्षाः स्मरन्तः ॥ १८ ॥

वह बिजली कहाँ छुप गई और वे खेल करते हुए मेघ कहाँ चले गये ? न जाने कहाँ वह गड़गड़ाहट गई और कहाँ वह रंग बिरंगा इंद्रधनुष जिसने इतना ठाठ दिखाया था । पानी पड़ते रहने के कारण लम्बे लगने वाले वे दिन अब कहाँ चले गये ? शरद् ऋतु में गीलेपन से रहित होकर ये वृक्ष पिछली बातों को स्मरण करते हुए से चुपचाप खड़े हैं ।

Where is that lightning now and where are those playing clouds ? Where are the thunder and the multi-coloured glorious rainbow ? Where, after all, have the rainy days gone that seemed so long ? In the 'carat season' calm trees devoid of moisture stand as if they be recollecting the past !

रागस्नातं रजन्यामिव भवति वनं शारदी भूतिरेषा
शष्पोद्यानान्तरेते ननु विभववतां शेरते सन्निवेशाः ।
ज्योत्स्नादीप्तां विलोक्य प्रकृतिमभिमुखं का दशा जायते न-
श्चेतः सौख्ये कियद्वा विकसति नियतं कः प्रवक्तुं समर्थः ?॥१९॥

रात को जंगल प्रेम में पगा हुआ सा जो लगता है वह शरद् ऋतु की महिमा है ।. उद्यानों की हरी घास के बीच ये धनिकों के बँगले ऐसे लगते हैं मानो सो रहे हैं । चाँदनी में इस संसार को देखकर हमारी क्या दशा हो जाती है, हम पर क्या बीतती है और हृदय सुख के क्षणों में कितना विकसित हो सकता है इस बात को कौन बता सकता है ?

It is the glory of 'Carat Season' that forest seems to be dipped in love at night, and the residences of rich people amidst the lawns of their gardens seem to be sleeping Who can describe exactly how much emotion our heart can develop in the moments cf pleasure or our mental state formed by seeing the landscape in moonlit night ?

आसन्ध्यं बोधकालादनवरतमहन्यर्थचिन्तापराणां
दारिद्र्योत्थं विषादं परिभवति शरत्पूर्णिमा पायसेन ।
संस्मार्य स्वादुलोकं बहुविधविकृतीर्मुद्गमाषप्रधाना
नूनं प्राणाभिलाषं वितरति जगतां नूतना शस्यसंपत् ॥ २० ॥

प्रातःकाल उठने से लेकर साँझ तक अर्थचिन्ता में डूबे हुए लोगों के दरिद्रता के कारण उत्पन्न हुए विषाद को शरत्पूर्णिमा खीर से कम करती है और यह जो मूँग एवं उड़द की प्रधानता लिए हुए नई खेती की उपज है वह स्वाद जानने वालों को इनसे (मूँग और उड़द से) बनाये जा सकने वाले भोज्य पदार्थों का स्मरण दिला कर सचमुच संसार में जीने की चाह बढ़ा रही है ।

When people remain absorbed in anxiety for living since waking in the morning right upto evening, it is the sweet soup prepared with milk, rice and sugar that menaces the grief of poverty on 'Çarat Pūrṇimā.' The new harvests abounding in Moong and Urad (Kidney bean) and reminding the consumers of the various preparations of food made out of them doubtless encourage people to live on.

नेदीयः प्रातरित्वा नगरमभिलषन् सायमेवानपायां
स्वग्रामं यो निवृत्तिं विपणिविचलितो वीक्ष्यते व्यस्तवृत्तिः ।
तूलं वा रामठं वा किमपि तदपरं वस्तु वा स प्रबुद्धो
वैश्येन क्रेतुकामः श्रयति कलिमहो ! नैव साम्राज्यहेतोः ॥२१॥

सांझ को निर्विघ्न अपने गाँव में लौट जाने का विचार लेकर जो पुरुष प्रातःकाल पास के नगर को आया है वह हाट की चहल पहल से चौंधिया कर रूई, हींग, या और किसी ऐसी ही वस्तु को खरीदते समय चतुराई दिखाता हुआ बेचने वाले से झगड़ पडा है । विश्वास रखिये, यह उनका झगड़ा किसी साम्राज्य के लिये नहीं है ।

Just see, the villager, who came to the city in the morning from suburbs with the thought of his safe return by the evening, is seen busy marketing here. He is sane enough to fall out with the shopman. Believe sir, he is not struggling for the sake of any empire but it is the bargain of some cotton, Hing, (Assa foetida) or anything like.

कालादिष्टं द्रुमाणां परिणमति पुरः श्यामलत्वं छदानां
हारित्यं कूललग्नं तनुसलिलमुपर्याचितं सद्म एव ।
सेवायां चित्तवृत्तिर्भवति शरदि तत्सन्ध्ययोर्यत्कृशानोः
शीतर्तोर्नूनमेतत्किमपि निकटताज्ञापकं लक्ष्म जातम् ॥ २२ ॥

इसे समय का ही आदेश समझिए कि देखते देखते ही पत्तों का रंग साँवला होने लगा है। पानी के ऊपर छाई जो काई की हरियाली पानी कम होने से किनारे पर चिपक कर रह गई है उसे बहुत दिन नहीं हुए; अभी चिपकी है। यह जो शरद् ऋतु में प्रातःकाल और सायंकाल आँच के पास बैठने को मन करता है वह अवश्य ही शीत ऋतु के पास आ जाने का कोई लक्षण विशेष है।

It is, of course, the demand of season that tree leaves have turned dark green before us. The green layer over the surface of water has just stuck to the banks of streams. As we like to sit by fire at the beginning and the end of day, it is surely an indication of cita season drawing near.

संहर्तुं कामवेगं प्रभुरहमिति संधार्य भार्यापरोक्षे
शीते शीतप्रतीपं निवसितुमिति वा चारु सङ्कल्प्य घर्मे।
जायासङ्गेष्वधीरः शिशिर इव हठादम्बरान्तर्गतोऽयं
योगस्थानां महत्त्वं प्रथयति विवशं वेपितो भोगिलोकः ॥२३॥

जो भोगी लोग भार्या की अनुपस्थिति में यों सोचते हैं कि हम काम के वेग को रोकने में समर्थ होगये और ग्रीष्म ऋतु में भली भाँति यह विचार लेते हैं कि हम जाड़ों में जाड़े की प्रतिकूल चर्या से रहेंगे वे पत्नी के पास रहने पर अधीरता से काम लेते हुए तथा या तो हठपूर्वक जाड़ों में खुले स्थान में ठिठुरते हुए या विवश होकर कपड़ों में घुस कर काँपते हुए रहकर योगियों के महत्त्व को सिद्ध कर रहे हैं।

If men, convinced in the absence of wives of their capacity to restrain passion and having planned in summer season to live against winter, show deliberaton before wives and are compelled to put on clothes or remain trembling stubbornly under the sky in cold season, they only attest to the greatness and importance of the abstained.

रूढायाः प्रौढकाले शयनमनु कदाप्युद्यतामर्धरात्रे
हेमन्ते निश्चलत्वं भजति परिगते जीर्णपर्णप्रसारे ।
चन्द्रोद्दीतालवालप्रणिहितमनसाश्चिन्तनान्तःस्थिताना-
मालोकोऽयं तुलस्याः प्रकटयति सतां किं प्रकाशे प्रभुत्वम् ॥२४॥

जो सज्जन कभी हेमन्त ऋतु में आधी रात को सोकर उठ बैठे हों और बहुत दिन के लगे तुलसी के पौधे के नीचे चुपचाप पड़े हुए सूखे पत्तों को देखते हुए चन्द्रमा की किरणों से प्रकाशित पौधे की जड़ के चारों ओर के पानी भरने के स्थान पर टक टकी बाँध कर एकाग्रमन से विचार में डूब गये हों तो उनको यह भान हुआ होगा कि प्रकाश में क्या शक्ति है ।

In Hemanta season if some gentleman happens to wake at midnight, has a view of the dry leaves of an old Tulasi plant lying still beneath it and falls in swooned meditation inspired through the gaze at the moonlit space around the plant, the glory of light might be revealed to him.

हेमन्ते लक्षयित्वा कृतभुवनभृतिः शासने लोकनिष्ठे
दुष्टप्रज्ञा वितण्डां विदधति गुरुभिः पण्डितैः सावलेपम् ।
सत्त्वोत्कर्षं चिकीर्षन्नर इव तमसां ताण्डवे संप्रवृत्ते
वात्युग्रं क्षिप्रमस्यन्मरुदपि जगतामप्रबोधे प्रमादम् ॥ २५ ॥

भुवन का भरण करने वाला यह पवन हेमन्त ऋतु में रात को इतनी तीक्ष्णता से चल रहा है कि लोग स्वप्न में भी प्रमाद नहीं कर सकते। प्रजातंत्र शासन में दुष्ट बुद्धि वाले लोग जब बड़े बड़े पण्डितों से अभिमानपूर्वक व्यर्थ तर्क करते हैं और तमोगुण की प्रबलता होती है तो किसी लोकनायक को लोक में सत्त्व (अच्छाई, जीवनशक्ति) बढ़ाने की इच्छा से उग्र रूप धारण करना पड़ जाता है। ऐसा लगता है मानो यह शीतकाल (आदान काल) का वायु भी लोगों में सत्त्व (बल) बढ़ाने के लिये ही चल पड़ा हो।

In Hemanta season, the air, the life-support of the world, is so sharp at night that it launches mankind out of carelessness even in sleep. The wind as if intending to increase the strength of people, blows swiftly just as a man of ministry, tending to develop 'Sattva' of the people, moves vigorously to stop the public negligence after watching the wicked intellectuals displaying evil and advancing proudly the fallacious arguments to oppose the highly wise in a democratic rule.

हेमन्तोऽयं वसन्ते त्ववतरति पुनर्लीयते यत्क्रमेण
स्थैर्यं मुक्त्वा तदित्थं तनुवसनवतः पीडयत्युग्रकर्मा ।
विस्रम्भाद्वीतभीतीनृजुकरणतया स्वार्थसिद्धौ विलुण्ठन्
गूढं कालानुसारं प्रतिवदति यथा राजनीतिप्रयोक्ता ॥ २६ ॥

विश्वास के कारण आशंका छोड़कर रहने वाले लोगों को उनके सीधेपन का लाभ उठाकर समय के अनुसार गूढ प्रयोग करके ठगने वाले राजनीति के प्रयोग-कर्ता के समान यह हेमन्त ऋतु वसन्त ऋतु में जिस ढँग से बार बार प्रकट होकर छुप जाता है उससे यह पतले कपड़े पहनना आरम्भ कर देने वालों को सताता रहता है ।

The Hemanta season makes its appearace in the Vasanta season so unexpectedly that it causes trouble to the persons using insufficient dress. In the same way, a diplomat sets his ambiguous wording at times to deceive those who believe them due to their plain thinking.

तल्पं संपादयेयं करचरणमुतांसौ सुसंवाहनेन
क्लान्त्या मुक्तौ विदध्यां किमपरमथवा कल्पयेयं भवद्भ्यः ।
इत्थं सह्यौष्ण्यशैत्यव्यतिकररमणा निर्धनत्वेऽपि तृष्या
वासन्ती संपदेयं पतिमिव यतते दक्षिणा धर्मपत्नी ॥ २७ ॥

'(अभी लीजिए) पलँग बिछा देती हूँ, हाथ पाँव और कंधों को दबा दबा कर थकावट दूर कर दूँगी या फिर बताइये न कि मैं आपके लिए और क्या करूँ? इस प्रकार पति के लिये न अधिक उष्ण और न अधिक शीतल स्पर्श का सुख देने के कारण अच्छी लगने वाली तथा निर्धनता के दिनों में भी हर्ष उत्पन्न करने वाली अनुकूल धर्म पत्नी के समान प्रयत्न करती हुई सी यह वसन्त की सम्पदा शोभा पा रही है।

'Let me prepare bed for you and just defatigue your hands, feet or shoulders with my light pressing. Besides, tell me please what else I should do for you.' In this way, the efforts of a kind wife towards her husband are moreakin to the present spring season that produces a thrill of joy even in poverty and is entertaining due to the moderate touches (on the skin).

स्पष्टं धृष्टद्विरेफैर्विलसति सुमनःसौरभेणाभियुक्ते
देशे कान्ते वसन्ते रहसि समदनासङ्गमस्यावकाशः।
संसारे भोगरागं जनयति च मतिर्जायते कातराणा-
माघ्रातुं प्रार्थ्यते हा! कथमिव यतिभिर्ब्रह्मविद्यापरागः? ॥२८॥

जब चौड़े दहाड़े धृष्टता करते फिरते भौरों वाले फूलों से सुगन्धित एकान्त स्थान पर वसन्त में मदनातुर कामिनी का साथ हो सकता हो तो ऐसे संसार में भोगों की इच्छा हो ही जाती है और कातर होकर पुरुष यों सोचने लगते हैं कि न जाने ये यति लोग कैसे किसी ब्रह्मविद्या का पराग लेने की प्रार्थना लिए बैठे हैं!

The possibility of association with a willing woman at a pleasing solitary place where bees be indulged in impertinence over flowers and flowers be diffusing their fragrance in spring season, is enough to enhance lust as well as attachment towards worldly pleasure. Then it is natural to think why these abstained devotees long for the nectar of divinity.

संस्तभ्यात्मानमेवं शृणु विरम सखे, मा कृथास्त्वं विलापं
पत्रैरेभिः पतद्भिस्त्वदिव करुणयाहो ! वयञ्चाप्यभिज्ञाः ।
घर्मासारप्रसारोत्पतितशिशिरतान्ते ततिर्वा तरूणां
धैर्योत्तीर्णापदानां विकसति सततं सन्ततिस्तापसानाम् ॥ २९

ओ मित्र, तनिक रुकजा और अपने को थाम कर मेरी बात सुन । मैं कहता हूँ कि तू रो मत । इन गिरते हुए पत्तों से और तेरे समान शोक की भावना से हम भी परिचित हैं । धूप, मेह और उसके पीछे आने वाले जाड़े के अन्त में जाकर कहीं वृक्ष विकसित हो पाते हैं । धीरता के साथ आपत्तियाँ झेलकर जीने वाले तपस्वियों की सन्तति भी निरन्तर समृद्ध होती है ।

O my friend, check yourself, wait and listen to me Do not cry. I am also acquainted to these falling leaves and the sense of grief in the world like you. Trees come in the prime of spring after heat, rains and cold. Great men thrive after passing the misfortunes patiently.

अलङ्कारकौतुकम्

प्रणेता—पण्डित श्रीहरिशास्त्री दाधीच
आम्नायधुरन्धर, साहित्यमहोपाध्याय
महोपदेशक, आशुकवि, कविभूषण
काव्यरत्नाकर वेदान्तभूषण
आगम–रत्न

श्रीपञ्चस्तवी

द्वितीय संस्करण प्रस्तुत है। यह प्रथम लघुस्तव की ७०० वर्ष प्राचीन संस्कृत टीका तथा भारत की वर्तमान राष्ट्रभाषा के अनुवाद के साथ मुद्रित है। शेष चार स्तोत्र मूलमात्र हैं। साथ ही इस संस्करण में 'श्रीमहानुभवशक्तिस्तव' भी दिया गया है। कागज और छपाई अच्छी है।

मूल्य ॥) डाक का व्यय अलग।

महामहिमश्रीमदमृतवाग्भवाचार्यप्रणीत

कुछ ग्रन्थरत्न

१ श्रीपरशुरामस्तोत्र–राष्ट्रभाषानुवादसहित ।
तृतीय संस्करण । मूल्य विश्वोद्धार

२ श्रीराष्ट्रालोक–राष्ट्रभाषानुवादसहित ।
तृतीय संस्करण । मूल्य ॥)

३ श्रीआत्मविलास–'श्रीसुन्दरी' राष्ट्रभाषाभाष्यसहित ।
मूल्य २)

४ श्रीसप्तपदीहृदय–राष्ट्रभाषानुवादसहित ।
मूल्य विश्वोद्धार

५ श्रीसंक्रान्तिपञ्चदशी–राष्ट्रभाषागद्यपद्यानुवादसहित ।
मूल्य ।)

६ श्रीमहानुभवशक्तिस्तव–संस्कृत तथा हिन्दी की व्याख्या के साथ मूल्य ॥)

७ श्रीमदमृतसूक्तिपंचाशिका–व्याख्यासहित (मुद्रणालय में है)।